उसने हमें पवित्र शास्त्र दिया: व्याख्या के आधार

अध्याय 3

पवित्र शास्त्र की जाँच करना

Manuscript

thirdmill
Biblical Education. For the World. For Free.

© थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ 2021के द्वारा

सर्वाधिकार सुरक्षित। इस प्रकाशन के किसी भी भाग को प्रकाशक, थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़, इनकोरपोरेशन, 316, लाइव ओक्स बुलेवार्ड, कैसलबरी, फ्लोरिडा 32707 की लिखित अनुमति के बिना समीक्षा, टिप्पणी, या अध्ययन के उद्देश्यों के लिए संक्षिप्त उद्धरणों के अतिरिक्त किसी भी रूप में या किसी भी तरह के लाभ के लिए पुनः प्रकशित नहीं किया जा सकता।

पवित्रशास्त्र के सभी उद्धरण बाइबल सोसाइटी ऑफ़ इंडिया की हिन्दी की पवित्र बाइबल से लिए गए हैं। सर्वाधिकार © The Bible Society of India

थर्ड मिलेनियम के विषय में

1997 में स्थापित, थर्ड मिलेनियम एक लाभनिरपेक्ष सुसमाचारिक मसीही सेवकाई है जो पूरे संसार के लिए मुफ्त में बाइबल आधारित शिक्षा प्रदान करने के लिए प्रतिबद्ध है।

संसार के लिए मुफ़्त में बाइबल आधारित शिक्षा।

हमारा लक्ष्य संसार भर के हज़ारों पासवानों और मसीही अगुवों को मुफ़्त में मसीही शिक्षा प्रदान करना है जिन्हें सेवकाई के लिए पर्याप्त प्रशिक्षण प्राप्त नहीं हुआ है। हम इस लक्ष्य को अंग्रेजी, अरबी, मनडारिन, रूसी, और स्पैनिश भाषाओं में अद्वितीय मल्टीमीडिया सेमिनारी पाठ्यक्रम की रचना करने और उन्हें विश्व भर में वितरित करने के द्वारा पूरा कर रहे हैं। हमारे पाठयक्रम का अनुवाद सहभागी सेवकाइयों के द्वारा दर्जन भर से अधिक अन्य भाषाओं में भी किया जा रहा है। पाठ्यक्रम में ग्राफिक वीडियोस, लिखित निर्देश, और इंटरनेट संसाधन पाए जाते हैं। इसकी रचना ऐसे की गई है कि इसका प्रयोग ऑनलाइन और सामुदायिक अध्ययन दोनों संदर्भों में स्कूलों, समूहों, और व्यक्तिगत रूपों में किया जा सकता है।

वर्षों के प्रयासों से हमने अच्छी विषय-वस्तु और गुणवत्ता से परिपूर्ण पुरस्कार-प्राप्त मल्टीमीडिया अध्ययनों की रचना करने की बहुत ही किफ़ायती विधि को विकसित किया है। हमारे लेखक और संपादक धर्मवैज्ञानिक रूप से प्रशिक्षित शिक्षक हैं, हमारे अनुवादक धर्मवैज्ञानिक रूप से दक्ष हैं और लक्ष्य-भाषाओं के मातृभाषी हैं, और हमारे अध्यायों में संसार भर के सैकड़ों सम्मानित सेमिनारी प्रोफ़ेसरों और पासवानों के गहन विचार शामिल हैं। इसके अतिरिक्त हमारे ग्राफिक डिजाइनर, चित्रकार, और प्रोडयूसर्स अत्याधुनिक उपकरणों और तकनीकों का प्रयोग करने के द्वारा उत्पादन के उच्चतम स्तरों का पालन करते हैं।

अपने वितरण के लक्ष्यों को पूरा करने के लिए थर्ड मिलेनियम ने कलीसियाओं, सेमिनारियों, बाइबल स्कूलों, मिशनरियों, मसीही प्रसारकों, सेटलाइट टेलीविजन प्रदाताओं, और अन्य संगठनों के साथ रणनीतिक सहभागिताएँ स्थापित की हैं। इन संबंधों के फलस्वरूप स्थानीय अगुवों, पासवानों, और सेमिनारी विद्यार्थियों तक अनेक विडियो अध्ययनों को पहुँचाया जा चुका है। हमारी वेबसाइट्स भी वितरण के माध्यम के रूप में कार्य करती हैं और हमारे अध्यायों के लिए अतिरिक्त सामग्रियों को भी प्रदान करती हैं, जिसमें ऐसे निर्देश भी शामिल हैं कि अपने शिक्षण समुदाय को कैसे आरंभ किया जाए।

थर्ड मिलेनियम a 501(c)(3) कारपोरेशन के रूप में IRS के द्वारा मान्यता प्राप्त है। हम आर्थिक रूप से कलीसियाओं, संस्थानों, व्यापारों और लोगों के उदार, टैक्स-डीडक्टीबल योगदानों पर आधारित हैं। हमारी सेवकाई के बारे में अधिक जानकारी के लिए, और यह जानने के लिए कि आप किस प्रकार इसमें सहभागी हो सकते हैं, कृपया हमारी वैबसाइट http://thirdmill.org को देखें।

विषय-वस्तु

प्रस्तावना....1
मूल अर्थ....1
ईश्वरीय-विज्ञान का आधार....3
लेखक....3
श्रोता....5
दस्तावेज....8
मूलभूत प्रेरणा....8
दिव्य समायोजन....10
महत्व....12
कलीसियाई इतिहास....12
आधुनिक कलीसिया....15
उपसंहार....16

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

उसने हमें पवित्र शास्त्र दिया:
व्याख्या के आधार

अध्याय तीन

पवित्र शास्त्र की जाँच करना

प्रस्तावना

कई तरीकों में, पवित्र शास्त्र को समझना पुरातत्व की खुदाई पर जाने जैसा है। हम सभी जानते हैं कि पुरातत्वविद अतीत से आने वाली चीज़ों का अध्ययन करने के लिए स्वयं को समर्पित करते हैं। वे प्राचीन स्थल पर कलाकृतियों को खोद निकालते हैं और कलाकृतियों के महत्व को उस रूप में फिर से संगठित करने की कोशिश करते हैं, जैसा कि वे पहली बार बनाए एवं उपयोग में लाए गए थे। हाँ, बहुत कुछ इसी तरह से, पवित्र शास्त्र की जाँच करने में अतीत से आने वाली चीज़ — यानी बाइबल में खुदाई करना शामिल है। हम बाइबल के उन अनुच्छेदों का पता लगाते हैं जो हज़ारों साल पहले लिखे गए और उनके मूल प्राचीन ऐतिहासिक परिवेशों में उनके महत्व का पुनः निर्माण करते हैं। उनके प्राचीन संदर्भों में पवित्र शास्त्रों की जाँच करना बाइबल की व्याख्या का एक महत्वपूर्ण आयाम है क्योंकि यह हमें उस पूरी तरह से विश्वसनीय, अचूक और आधिकारिक अर्थ की खोज करने में सक्षम बनाता है, जिसे कि पवित्र आत्मा और उसके द्वारा प्रेरित मानव लेखकों ने तब अभिप्रेत किया, जब पवित्र शास्त्र को पहली बार लिखा गया था।

हमारी श्रृंखला *उसने हमें पवित्र शास्त्र दिया* का यह तीसरा अध्याय है: *व्याख्या के आधार* और हमने इसका शीर्षक रखा है "पवित्र शास्त्र की जाँच करना।" इस अध्याय में, हम उन कई अवधारणाओं पर ध्यान केंद्रित करेंगे जो पवित्र शास्त्र के अर्थ को खोजने और पता लगाने के लिए महत्वपूर्ण हैं।

पवित्र शास्त्र की जाँच की प्रक्रिया वाली हमारी चर्चा तीन भागों में विभाजित होगी। सबसे पहले, हम मूल अर्थ को परिभाषित करेंगे, जो हमारी जाँच का उद्देश्य है। दूसरा, हम पवित्र शास्त्र के मूल अर्थ पर ध्यान केंद्रित करने के लिए ईश्वरीय-विज्ञान के आधार को समझाएंगे। और तीसरा, हम मूल अर्थ पर उचित ध्यान देने के महत्व को देखेंगे। आइए मूल अर्थ की परिभाषा के साथ शुरू करें।

मूल अर्थ

हम सभी के पास ऐसे अनुभव हैं जब किसी ने हमारे द्वारा कही गई या लिखी गई किसी बात को गलत समझा है, और हम आमतौर पर कुछ ऐसा कहते हैं, "आप जानते हैं, मेरा कहने का यह तात्पर्य नहीं था।" हम इसे पसंद नहीं करते जब लोग हमारे वचनो को लेते हैं और उनका गलत ढंग से उपयोग करते हैं जो हमारी कही हुई बात के बिल्कुल खिलाफ होता है। और आमतौर पर व्याख्या के कुछ शब्द बातों को ठीक कर देते हैं। लेकिन जब उस बात के मूल अर्थ का पता लगाने की बारी आती है तो, उनका जो हज़ारों वर्ष पहले कही या लिखी गई थी, जैसे पवित्र शास्त्र, उनका पता लगाना आसान नहीं होता हैं। हमें रुकना और कुछ प्रश्नों को पूछना पड़ता है: बाइबल के किसी अनुच्छेद के "मूल अर्थ" से हमारा क्या तात्पर्य है? हमें इसमें दिलचस्पी क्यों लेनी चाहिए? हमारे लिए आज यह महत्वपूर्ण क्यों है?

मूल अर्थ को कैसे परिभाषित करना है इस पर अनेक बौद्धिक वाद-विवाद हुए हैं। लेकिन इस श्रृंखला के उद्देश्यों के लिए, हम किसी पाठ्यांश के मूल अर्थ को निम्न रूप में परिभाषित करेंगे:

> वे अवधारणाएं, व्यवहार और भावनाएं जिन्हें दिव्य एवं मानव लेखकों ने संयुक्त रूप से इसके पहले श्रोताओं को बताने के लिए दस्तावेज को अभिप्रेत किया था।

निश्चित रूप से, ऐसी कई जटिलताएँ हैं, जिन्हें यह परिभाषा खड़ी करती है, और जब हम आगे बढ़ते हैं तो उनमें कुछ के साथ हम कार्य करेंगे।

आइए शब्द "संसूचित" से शुरू करें, जिसे हम यथासंभव व्यापक अर्थों में लेंगे। पवित्र आत्मा और पवित्र शास्त्र के मानव लेखक दोनों चाहते थे कि उनकी बाइबल की पुस्तकें कई स्तरों पर संसूचित करें। दुर्भाग्य से, पवित्र शास्त्र की संसूचना के बारे में हम मुख्यतः उन विचारों या अवधारणाओं के संदर्भ में सोचने की प्रवृति रखते हैं जिन्हें बाइबल के लेखक अपने श्रोताओं को सूचित करना चाहते थे। लेकिन बाइबल का अर्थ इससे कहीं अधिक समृद्ध है। जैसा कि एक पारंपरिक दृष्टांत कहता है, कि पवित्र शास्त्र सिर, हाथों और हृदय के संदर्भ में संवाद करता है। या इसे इस अध्याय में उपयोग किए गए शब्दों में कहें तो, यह अवधारणाओं, व्यवहारों और भावनाओं के संदर्भ में संवाद करता है। बाइबल के लेखकों ने पवित्र शास्त्र को अपनी अवधारणाओं, व्यवहारों और भावनाओं के साथ-साथ अपनी पुस्तकों में उल्लिखित अन्य लोगों का ध्यान आकर्षित करने के लिए डिज़ाइन किया। लेकिन इससे भी अधिक, बाइबल के पाठ्यांशों का उद्देश्य अपने श्रोताओं की अवधारणाओं, व्यवहारों और भावनाओं को प्रभावित करना और बदलना भी था। जैसा कि हम 2 तीमुथियुस 3:16-17 में पढ़ते हैं:

> सम्पूर्ण पवित्रशास्त्र परमेश्वर की प्रेरणा से रचा गया है और उपदेश, और समझाने, और सुधारने, और धार्मिकता की शिक्षा के लिये लाभदायक है, ताकि परमेश्वर का जन सिद्ध बने, और हर एक भले काम के लिये तत्पर हो जाए (2 तीमुथियुस 3:16-17)।

पवित्र आत्मा ने विश्वासियों के जीवनों में इन सभी बातों और इनसे भी अधिक को पूरा करने के लिए पवित्र शास्त्र को डिज़ाइन किया। इसलिए, जब हम कहते हैं कि हमारी जाँचों का उद्देश्य मूल अर्थ को खोजना है, तो हम सिर्फ यह पता लगाने की कोशिश नहीं कर रहे हैं कि शब्द के संकीर्ण बौद्धिक अर्थ में शब्दों और वाक्यों का क्या अर्थ हो सकता है। इसके बजाय, हम प्रभाव की उस पूरी श्रृंखला की खोज कर रहे हैं जिनका मूल लेखक अपने पहले श्रोताओं के जीवनों में डालना चाहते थे।

जब हम मूल अर्थ की अवधारणा पर विचार करते हैं, तो इन तीन मुख्य बातों को ध्यान में रखना

सहायक है: जिस बाइबल से सम्बंधित दस्तावेज की हम जाँच कर रहे हैं, वह मानव लेखक जिसे पवित्र आत्मा ने दस्तावेज को लिखने के लिए प्रेरित किया, और वे श्रोतागण जिन्हें मानव लेखक ने दस्तावेज के पहले प्राप्तकर्ता बनने के लिए चुना।

दस्तावेज महत्वपूर्ण है क्योंकि ये परमेश्वर के वास्तविक वचन हैं जो पहले श्रोताओं को भेजे गए थे। मानव लेखक महत्वपूर्ण हैं क्योंकि, मूलभूत प्रेरणा के माध्यम से, दस्तावेज लेखक के विचारों, इरादों, भावनाओं, साहित्यिक कौशलों, और इसी तरह की अन्य बातों को दर्शाता है। और श्रोतागण महत्वपूर्ण हैं क्योंकि पवित्र आत्मा और मानव लेखक दोनों ने दस्तावेज को इस रीति से तैयार किया जो विशेष रूप से उनके स्वयं के संदर्भ और परिस्थितियों में उनसे बात करता है। इसका अर्थ है कि बाइबल का प्रत्येक पाठ्यांश इतिहास में समय और लेख के मूल श्रोताओं द्वारा अनुभव किए गए जीवन-स्थिति के लिए ऐतिहासिक रूप से अनुकूलित किया गया, या समायोजित किया गया था।

यह सत्य है कि मानव लेखकों ने ऐसे दस्तावेजों को रचा जो उनके श्रोताओं को उन तरीकों से प्रभावित करते हैं जैसा उन्होंने कभी सोचा नहीं था। लेकिन जाँच की प्रक्रिया में, हम विशेष रूप से रुचि रखते हैं कि बाइबल के लेखकों ने अपने दस्तावेजों के माध्यम से अपने मूल श्रोताओं को प्रभावित करने का कार्य कैसे किया। इसलिए, बाइबल के अनुच्छेद के मूल अर्थ की जाँच करने में पाठ्यांश का पता उस

मायने में लगाना शामिल है जैसा कि यह अभी भी अपने लेखक और पहले श्रोताओं के ऐतिहासिक परिस्थितियों के भीतर था। इस तरह की जाँच-पड़ताल में बहुत अधिक शोध, सावधानीपूर्वक सोच और कल्पना की आवश्यकता पड़ती है। दूसरे शब्दों में, इसके लिए बहुत अधिक मानवीय प्रयासों की आवश्यकता होती है क्योंकि बाइबल के दस्तावेज अब अपने मूल परिवेशों में मौजूद नहीं हैं।

मूल अर्थ की इस समझ को ध्यान में रखते हुए, जब हम पवित्र शास्त्र की जाँच कर रहे हैं, तो आइए इस पर जोर देने के ईश्वरीय-विज्ञान के आधार को संबोधित करें।

ईश्वरीय-विज्ञान का आधार

पवित्र शास्त्र की हमारी जाँच में मूल अर्थ के तीन पहलूओं पर जोर देने के लिए ईश्वरीय-विज्ञान एक मजबूत आधार है। सबसे पहले, हम लेखक पर ध्यान देने के लिए ईश्वरीय-विज्ञान के आधार पर बात करेंगे। दूसरा, हम मूल श्रोताओं पर विचार करेंगे। और तीसरा, हम स्वयं दस्तावेज के कार्य को देखेंगे। आइए मानव लेखक पर विचार करने के लिए ईश्वरीय-ज्ञान वाले आधार के साथ शुरूआत करें।

लेखक

एक पिछले अध्याय में, हमने उल्लेख किया था कि बाइबल परमेश्वर द्वारा मूल भूत रूप से प्रेरित है। पवित्र आत्मा ने अपने शब्दों को बाइबल के मानव लेखकों के विचारों, व्यक्तित्वों, अनुभवों, भावनाओं और विचारों के प्रारूपों के माध्यम से संचारित करने का चुनाव किया है। और बाइबल में कई ऐसे स्थान हैं जहाँ मानव लेखकों के महत्व को स्पष्ट रूप से बताया गया है। उदाहरण के लिए, मत्ती 22:41-45 में यीशु ने जो कहा उसे सुनिए:

> यीशु ने उन से पूछा, "मसीह के विषय में तुम क्या सोचते हो? वह किसका पुत्र है?" उन्होंने उससे कहा, "दाऊद का।" उसने उनसे पूछा, "तो दाऊद आत्मा में होकर उसे प्रभु क्यों कहता है? 'प्रभु ने, मेरे प्रभु से कहा, मेरे दाहिने बैठ, जब तक कि मैं तेरे बैरियों को तेरे पाँवों के नीचे न कर दूँ।' भला, जब दाऊद उसे प्रभु कहता है, तो वह उसका पुत्र कैसे ठहरा?" (मत्ती 22:41-45)

इस अनुच्छेद में, यीशु ने भजन 110 के लिए दाऊद की लेखनकारिता का हवाला दिया। और उसने विशेष रूप से भजन की अपनी व्याख्या को इस तथ्य से जोड़ा कि इसका मानवीय लेखक दाऊद था।

यीशु ने सुस्पष्ट किया कि चुंकि दाऊद ने मसीह को "प्रभु" कहा, तो मसीह सिर्फ दाऊद का पुत्र नहीं हो सकता था। मसीह को दाऊद से भी बड़ा होना था। वास्तव में, यीशु का तर्क सिर्फ तभी समझ में आता है यदि हम इस तथ्य पर विचार करते हैं कि दाऊद ने इस भजन को लिखा था। और जैसे कि यीशु ने यहाँ किया, सभी जिम्मेदार व्याख्या बाइबल की पुस्तकों के मानव लेखकों के महत्व को स्वीकार करते हैं।

> बाइबल लिखने वाले पुरुषों के गहन ज्ञान को प्राप्त करना बाइबल को पढ़ने और अध्ययन करने की खुशियों में से एक है। और हमें गहन समझ देते हुए, अक्सर इसके पास पवित्र शास्त्र को प्रकाशित करने का एक तरीका है। इसके लिए सभी प्रकार के उदाहरण हैं। मैं सोचता हूँ, उदाहरण के लिए, रोने वाले भविष्यद्वक्ता

> यिर्मयाह की सेवकाई, और उस बात को समझना जो उसने सहा जब उसने यरूशलेम में परमेश्वर के लोगों के खिलाफ़ दण्ड की भविष्यवाणी की और फिर वास्तव में उस नगर के ऊपर परमेश्वर के दण्ड को आता हुआ अनुभव भी किया और फिर उस नगर पर आने वाली आपदा पर शोक किया। यह सब यिर्मयाह की पूरी पुस्तक की गहरी, समृद्ध समझ को प्रदान करता है। या प्रेरित पौलुस के बारे में वह सब जो हम जानते हैं उस पर विचार करें और प्रेरितों के काम की पुस्तक में उसकी सेवकाई के बारे में बताई गई कहानियों के संदर्भ में उसकी पत्रियों को पढ़ना कितना मददगार है। बाइबल के लेखकों के जीवन और अनुभव को समझने में हमारी मदद करने के द्वारा बाइबल अपने अर्थ की पुष्टि करती है, और यह उनके शिक्षण को इसके उचित संदर्भ में स्थापित करती है।
>
> — डॉ. फिलिप्प रायकेन

मानव लेखक पर ध्यान केंद्रित करने से हमें पवित्र शास्त्र की कई विशेषताओं को समझने में मदद मिलती है। एक और उदाहरण के रूप में, उन अलग-अलग तरीकों पर विचार करें जिनमें 2 शमूएल और 1 इतिहास दाऊद के राज्य की कहानी बताते हैं। 2 शमूएल ने बतशेबा के साथ दाऊद के पाप और दाऊद के पाप के बाद आने वाले अबशालोम के विद्रोह के लिए नौ अध्यायों को समर्पित किया। लेकिन 1 इतिहास इन कहानियों के किसी भी हिस्से को नहीं बताता है। दाऊद की वंशावली को छोड़कर, यह बतशेबा और अबशालोम के नामों तक का भी उल्लेख नहीं करता। दाऊद के जीवन में इतनी प्रमुख घटनाओं को इतिहासकार ने क्यों छोड़ दिया होगा? इसका उत्तर शमूएल और इतिहास के मानव लेखकों की ऐतिहासिक परिस्थितियों और उनकी मंशा से सम्बंधित है। शमूएल की पुस्तकों का लेखक यह दिखाने में रुचि रखता था कि दाऊद की कमियों के बावजूद दाऊद का वंश इस्राएल के लिए परमेश्वर की पसंद था, इसलिए यह बताना कि दाऊद ने अपने पाप के प्रति कैसी प्रतिक्रिया दी, यह कहानी के लेखक की कथा उद्देश्य के लिए महत्वपूर्ण थी। लेकिन इतिहास का लेखक बंधुवाई से लौटने वाले श्रोताओं के लिए इस्राएल का एक बहुत ही संक्षिप्त इतिहास लिख रहा था। उसने शमूएल का खण्डन नहीं किया, लेकिन उसने दाऊद के जीवन के कुछ ही हिस्सों को सिर्फ दर्ज किया जो उसके कथा उद्देश्यों के अनुकूल थे, जो लौटने वाले अगुवों को सिखाने के लिए थे कि इस्राएल में दाऊद के वंश के राजा को कैसे शासन करना चाहिए।

> आज विशेषकर हमारे पास उस वास्तविक परिवेश के बारे में ढेरों जानकारी उपलब्ध है जब उनके लेखक के संदर्भ में और साथ में उनके श्रोताओं के संदर्भ में बाइबल की पुस्तक को लिखा गया था। और विशेषकर किसी पाठ्यांश के समझवाली और यहाँ तक कि सही समझ और अनुप्रयोग तक हमें ले जाने में सहायता देने के लिए यह जानकारी बहुत, बहुत मददगार हो सकती है, ताकि जो मूल लेखक का अर्थ था या जो मूल श्रोताओं ने सुना था उसके लिए हम कुछ भी ऐसा नहीं कह रहे हों, जो उससे किसी भी रीति से संबंधित न हो। फिर भी, मैं सोचता हूँ कि इस तरह की जानकारी, बाइबल के लेखक और बाइबल के श्रोताओं के बारे में उस पृष्ठभूमि की जानकारी, कुछ ऐसा है जिसको मुझे "एक अच्छे सेवक लेकिन बुरे स्वामी" के रूप में वर्णित करना पसंद है। जब हम बाइबल की व्याख्या कर रहे हैं तो यह वास्तव में हमारी मदद कर सकता है, लेकिन यदि हम इसे ऐसा प्रमुख तरीका और प्रमुख मार्ग बनाते हैं जिसके माध्यम से हम यह समझते हैं कि बाइबल क्या कह रही है, तो मैं सोचता हूँ कि अकसर यह हमारी समझ को सीमित करता है और यहाँ तक कि यह कई बिंदुओं पर

> गलत अर्थ भी बता सकता है। इसलिए यह मददगार है, लेकिन पवित्र शास्त्र के अपने अध्ययन के आरंभ या अंत में इसे अपना प्रमुख केंद्रबिन्दु न बनाए।
>
> — डॉ. जॉनथन टी. पेनिंगटन

> पवित्र शास्त्र के किसी विशेष भाग को समझने के लिए लेखक के मूल संदर्भ के बारे में जानने में अविश्वसनीय मूल्य है। लेकिन पहले सिर्फ एक छोटी सी चेतावनी कहने के लिए: वास्तव में, पवित्र शास्त्र का अधिकार उसमें है जो लिखा गया है, न कि लेखक की पृष्ठभूमि के बारे में हमारी कल्पना या पुनर्निर्माण करने में। इसलिए, भले ही हम लेखक की पृष्ठभूमि को पूरी तरह से न समझते हों लेकिन जब तक हम यह याद रखते हैं कि उनके वचन सत्य हैं, यह महत्वपूर्ण है। लेकिन यदि हम लेखक के संदर्भ और उनके व्यक्तित्व के बारे में कुछ और ज्यादा समझ सकते हैं, तो यह हमारी मदद करने वाला हो सकता है। और मैं सोचता हूँ कि उनके साथ कल्पनाशील संबंध बनाने में सक्षम होने में यह हमारी मदद करेगा। और इसलिए हम जेल में पौलुस की कल्पना कर सकते हैं और यह देखना शुरू कर सकते हैं यह कैसा रहा था, और हम उनके साथ सहज ज्ञान और कल्पनाशील वाला संबंध बना सकते हैं। और यह पवित्र शास्त्र को हमारे लिए त्रि-आयामी बनाने जा रहा है, न सिर्फ भावशून्य या दो-आयामी।
>
> — डॉ. पीटर वॉकर

उन अनुच्छेदों के समान जिनका हम उल्लेख कर चुके हैं, पवित्र शास्त्र दर्शाता है कि हमारे लिए पवित्र शास्त्र के अंतिम लेखक के रूप में न सिर्फ परमेश्वर पर, परन्तु मानव लेखकों पर भी ध्यान केंद्रित करना कितना महत्वपूर्ण है, जिन्हें उसने प्रेरित किया। और इसका अर्थ है कि हमें इन लेखकों की परिस्थितियों, व्यक्तित्वों, अनुभवों, कौशलों और इरादों के बारे में जितना अधिक हो सके सीखना होगा। बाइबल के दस्तावेज के मानव लेखक पर जोर देने के ईश्वरीय-ज्ञान वाले आधार को देखने के बाद, आइए मूल अर्थ की हमारी जाँच के दूसरे पहलू की ओर ध्यान लगाएं: उस दस्तावेज के पहले श्रोता या प्राप्तकर्ता।

श्रोता

क्या आपने कभी गौर किया कि पूरे बाइबल के इतिहास में परमेश्वर ने अपने लोगों को अपना वचन उसी ढंग से दिया जो उनके ऐतिहासिक परिस्थितियों के अनुकूल था? कल्पना कीजिए कि यदि परमेश्वर ने प्राचीन इस्राएल को दस आज्ञाओं का कम्प्यूटरीकृत संस्करण दिया होता। या यदि परमेश्वर ने शुरूआती कलीसिया को नया नियम आधुनिक फ्रेंच या मंडारिन भाषा में दिया होता? ये परिदृश्य कोई मायने नहीं बनाते क्योंकि पवित्र शास्त्र के मूल श्रोताओं को यह समझ में नही आया होता कि परमेश्वर उनसे क्या कह रहा है। और, बेशक, इतना ही नहीं है जो परमेश्वर ने किया। उसने दस आज्ञाओं को पत्थरों पर लिखा। उसने यूनानी भाषा में लिखने के लिए मसीह के प्रेरितों और भविष्यद्वक्ताओं की अगवाई की। वास्तव में, पूरे बाइबल के इतिहास में, एक स्तर या दूसरे तक, परमेश्वर ने हमेशा अपने प्रकाशन को अपने मूल श्रोताओं के लिए समायोजित किया ताकि वे समझ सकें।

दिव्य समायोजन का विचार यह है कि:

> परमेश्वर ने अपने प्रकाशन को इस तरह से डिजाईन किया इसके पहले श्रोता इसे समझ सकें।

उसने पवित्रशास्त्र के वचनों और विचारों को संस्कृति, प्रौद्योगिकी, सामाजिक संरचनाओं और यहां तक कि इसके पहले दर्शकों के धार्मिक अनुभवों के अनुकूल बनाया, ताकि वे समझ सकें कि वह क्या कह रहा था।

यह सामान्य से विशिष्ट समायोजनों तक के स्पेक्ट्रम के संदर्भ में दिव्य समायोजन के बारे में सोचने में मदद करता है। स्पेक्ट्रम के एक छोर पर, पवित्र शास्त्र के प्रत्येक भाग को सार्वभौमिक मानव स्थिति के अनुरूप होने के लिए लिखा गया था। इससे हमारा तात्पर्य यह है कि हर बार जब परमेश्वर ने स्वयं को मनुष्य के लिए प्रकट किया, तो उसने इसे उन तरीकों से किया, जो एक तरह या किसी अन्य में, पूरे इतिहास में प्रत्येक मनुष्य के लिए लागू होता था।

ज़ॉन कैल्विन ने अपने *इन्स्टिटट्यूट ऑफ द क्रिश्चियन रिलीजन,* पुस्तक 1, अध्याय 13, भाग 1 में जिस तरीके से समायोजन के सामान्य पहलू का वर्णन किया उसे सुनिए:

> कौन ... उसको नहीं समझता है, जैसे नर्सें आमतौर पर शिशुओं के साथ करती हैं, वैसे ही परमेश्वर हमारे साथ बात करने में कुछ हद तक अस्पष्ट रीति या जिसे हम तुतलाहट भी बोल सकते हैं , से बोलने का व्यवहार करता है? ...इस तरह बोलने के द्वारा कुछ हद तक हम हमारी मामूली क्षमता के साथ उसके ज्ञान को समायोजित करते हैं।

जैसा कि कैल्विन ने बताया, परमेश्वर की बुद्धि हमारी बुद्धि से बहुत परे है जिसके कारण उसे हमसे ऐसे बोलना पड़ता है जैसे एक नर्स किसी शिशु से बातें करती है। क्योंकि परमेश्वर तुलना में हमसे बहुत महान है, इसलिए उसे बहुत नीचे झूकना पड़ता है ताकि हम लोग उसे समझ सकें।

हम पूरे पवित्र शास्त्र में इस तरह के सार्वभौमिक समायोजन को देखते हैं। यह मानवत्वारवादों में सबसे नाटकीय रूप से प्रकट होता है — अर्थात पवित्र शास्त्र में ऐसे समय जब परमेश्वर बोलता है, व्यवहार करता है, या उन तरीकों में प्रकट होता है जो बिल्कुल मानवीय लगते हैं। परमेश्वर मानवीय भाषा बोलता है; वह दुःखी हुआ; वह अपने इरादों को बदलता है; वह प्रश्नों को पूछता है। दिव्य प्रकाशन के ये और अनगिनत अन्य विशेषताएं हमारी सामान्य मानवीय सीमाओं को संतुष्ट करने के लिए डिज़ाइन की गई थीं।

दिव्य समायोजन के स्पेक्ट्रम के बीच में, परमेश्वर अपने प्रकाशन को सांस्कृतिक अपेक्षाओं के लिए भी अनुकूल बनाता है। उदाहरण के लिए, उसने स्वयं को प्राचीन मध्य-पूर्व में प्रकट किया। और इस सांस्कृतिक संदर्भ में, उसने वाचाओं की स्थापना की जो प्राचीन मध्य-पूर्व की अन्तर्राष्ट्रीय संधियों से मिलती जुलती थीं। भाषा के संबंध में, परमेश्वर ने स्वयं को अपने पहले श्रोताओं की विशिष्ट भाषाओं के माध्यम से प्रकट किया, जैसे कि इस्राएल देश के लिए पुराने नियम में इब्रानी और अरामी भाषा, और अन्तर्राष्ट्रीय नए नियम की कलीसिया के लिए यूनानी भाषा। बाइबल में, दिव्य प्रकाशन ने पवित्र शास्त्र के मूल श्रोताओं के इन प्रकारों की व्यापक सांस्कृतिक परिस्थितियों को ध्यान में रखा। सांस्कृतिक अपेक्षाओं के लिए समायोजन के एक उदाहरण के रूप में मत्ती 19:8 को सुनिए:

> यीशु ने उनसे कहा, "मूसा ने तुम्हारे मन की कठोरता के कारण तुम्हें अपनी-अपनी पत्नी को छोड़ देने की आज्ञा दी, परन्तु आरम्भ से ऐसा नहीं था।"

पहले वाले पदों में, यीशु ने कहा था कि सृष्टि के समय परमेश्वर ने विवाह को ठहराया, और तलाक आदर्श विवाह का हिस्सा नहीं था। फिर वह समझाना जारी रखता है कि केवल इस्राएल के हृदय की पापी कठोरता के कारण मूसा ने व्यवस्थाविवरण 24:1-4 में तलाक की अनुमति दी थी।

व्यवस्थाविवरण 24 में, मूसा ने व्यवस्था दी कि तलाकशुदा स्त्री को तलाक का त्यागपत्र दिया जाए। यीशु के दिनों में कुछ फरीसियों ने किसी भी कारण से तलाक को सही ठहराने के लिए, जब तक

एक त्यागपत्र दिया जाना था, इस अनुच्छेद का उपयोग किया था। लेकिन ध्यान दें कि यीशु ने मूल श्रोताओं के लिए परमेश्वर के समायोजन में कैसे सुस्पष्ट किया। उसने कहा कि परमेश्वर ने यह आज्ञा इसलिए दी, "क्योंकि तुम्हारे मन कठोर थे।" इस आधार पर, यीशु ने तर्क दिया कि मूसा ने अपने पहले श्रोताओं, इस्राएल देश के लिए सिर्फ समायोजन के रूप में तलाक की "अनुमति" दी। तलाक आदर्श नहीं था, और यह वास्तव में स्वीकार्य भी नहीं था। लेकिन इस्राएल के जिद्दी और क्षमा न करने वाली आत्मा के प्रकाश में, परमेश्वर ने तलाक पत्र की अनुमति उनके पाप से होने वाले नुकसान को कम करने के तरीके के रूप में दी थी।

यह उदाहरण बताता है कि बाइबल के अनुच्छेद के मूल श्रोताओं की जाँच करना कितना महत्वपूर्ण हो सकता है। फरीसियों के इस प्रथा के लिए यीशु का सुधार पवित्र शास्त्र के मूल श्रोताओं के लिए, मूसा की व्यवस्था के दिव्य समायोजन पर आधारित था।

स्पेट्रम की दूसरी छोर पर, परमेश्वर ने अपने प्रकाशन को अकेले व्यक्तियों के लिए भी समायोजित किया, जैसे कि ऐसे विशेष लोग जिनसे वह बोला। उसने लोगों के विशेष समूहों और यहाँ तक कि कभी-कभी विशिष्ट व्यक्तियों की ताकतों और कमजोरियों, और उपलब्धियों और विफलताओं को भी ध्यान में रखा।

उदाहरण के लिए, नए नियम में हमारे पास कई पत्रियां हैं जो किसी विशेष कलीसिया या अन्य को संबोधित की गई हैं। और उन पत्रियों के भीतर, कुलुस्सियों 3 जैसे स्थानों में, हम ऐसी शिक्षाओं को पाते हैं जो उन कलीसिया के भीतर छोटे समूहों की दी गई हैं, जैसे पिताओं, बच्चों, दासों और स्वामियों को। और पौलुस के कुछ पत्र वास्तव में विशिष्ट व्यक्ति को लिखे गए थे, जैसे कि फिलेमोन, 1 और 2 तीमुथियुस, और तीतुस। विभिन्न तरीकों में, पवित्र आत्मा ने उनके मूल श्रोताओं की विशिष्ट आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए इन पवित्र शास्त्र वाले प्रकाशनों की रचना की। इसलिए, प्रकाशन को उचित रीति से समझने के लिए, हमें उन मूल श्रोताओं के बारे में जितना हो सके उतना अधिक सीखना होगा।

> वैसे, जब बाइबल के लेखक किसी विशेष श्रोता को लिख रहे थे, तो शुरूआती पाठकों के संदर्भ को समझना हमारे लिए महत्वपूर्ण है। यह बहुत, बहुत महत्वपूर्ण है। उदाहरण के लिए, जब आप इब्रानियों की पुस्तक को लेते हैं ... तो उसका लेखक, जिसको हम नहीं जानते हैं, वह लेखक यहूदी मसीहों के बिखरे हुए समूह के श्रोताओं को लिख रहा था, और वे सताए जा रहे थे। और उन्हें यहूदी धर्म में वापस जाने हर एक प्रलोभन मिला होगा क्योंकि उनके पास यहूदी धर्म के तहत कुछ स्तर की सुरक्षा मिल गई होती। और इसलिए जब वे लोग जो उन्हें सताने के लिए आ रहे थे, तो उनके पास अपने मसीही विश्वास को त्यागने के लिए हर एक प्रलोभन रहा होगा। इसलिए लेखक क्या कर रहा है, वह उस ऐतिहासिक संदर्भ को समझ रहा है, पाठकों को समझ रहा है, उन्हें पुराने नियम में सभी दूसरे व्यक्तियों और प्रणालियों के ऊपर यीशु मसीह के व्यक्ति की सर्वोच्चता के बारे में प्रोत्साहित करने की कोशिश कर रहा है।
>
> — डॉ. स्टीफन ऊम

> परमेश्वर ने एक विशेष स्थान में, एक विशेष समय में स्वयं को मूल श्रोताओं के सामने प्रकट किया। बाइबल के बारे में यह उल्लेखनीय बातों में से एक है। यह स्वर्ग से आदेशों का संग्रह मात्र नहीं है। परमेश्वर एक विशेष परिवेश में विशेष लोगों से बात कर रहा था, और इसलिए जब हम यह जानते हैं कि वे जो परमेश्वर से सुन रहे थे, जो वे परमेश्वर से प्राप्त कर रहे थे, उसे उन्होंने कैसे समझा, तो यह

> बात, यह जानने में हमारी मदद करती है कि हमारी स्वयं की समझ के लिए सीमाएं क्या हैं। यदि मैं बाइबल को किसी ऐसी रीति से समझ रहा हूँ जो उससे बहुत अलग है जैसा मूल श्रोताओं ने इसे समझा था, तो इसमें कुछ गलत है। निश्चित रूप से, मेरा अपना संदर्भ अंतर बनाएगा, लेकिन उनके संदर्भ के प्रकाश में मेरे अपने संदर्भ को समझना होगा, और तब मुझे पता चलेगा कि व्याख्या की संभावित सीमाएं क्या हो सकती हैं।
>
> — डॉ. जॉन ओसवॉल्ट

अब तक पवित्र शास्त्र के मूल अर्थ पर हमारी जाँच को ध्यान केंद्रित करने के ईश्वरीय-ज्ञान वाले आधार की चर्चा में, हमने लेखक और मूल श्रोताओं के महत्व पर विचार किया है। इसलिए इस बिन्दु पर, हम स्वयं बाइबल के दस्तावेज पर ध्यान देने के लिए तैयार हैं।

दस्तावेज

यह स्पष्ट होना चाहिए कि यदि हम बाइबल के किसी अनुच्छेद का मूल अर्थ जानना चाहते हैं, तो हमें स्वयं अनुच्छेद पर ही ध्यान देना होना। अब हममें से कई लोगों के लिए, इसका अर्थ है कि हम सिर्फ बाइबल के अपने आधुनिक अनुवादों को पढ़ें। आधुनिक अनुवाद अचूक नहीं हैं, लेकिन वे कलीसिया के सबसे महत्वपूर्ण शिक्षण सेवकाईयों में से एक का प्रतिनिधित्व करते हैं। और जब तक हम किसी विशेष शब्द या वाक्यांश पर जो किसी एक या दूसरे अनुवाद में भिन्न हो सकता है बहुत अधिक निर्भर न रहने के लिए सावधान रहते हैं, तब हम उन अनुवादों से बहुत कुछ सीख सकते हैं जिनका उपयोग हम करते हैं। लेकिन जैसे कि यह अध्याय जोर देता है, हमें बाइबल के अनुच्छेद के मूल अर्थ को समझने के लिए वह सब करना चाहिए जो हम कर सकते हैं — जैसा कि परमेश्वर की आत्मा और उसके द्वारा प्रेरित लेखकों का उद्देश्य था। इसलिए, जब परमेश्वर हमें अवसर देता है, तो हमें भी पवित्र शास्त्र की मूल भाषाओं से यथासंभव परिचित होना जाना चाहिए: पुराने नियम में इब्रानी और अरामी और नए नियम में यूनाना भाषा। अब हममें से कुछ ही इन भाषाओं में विशेषज्ञ बनेंगे, लेकिन जितना अधिक हम उनके बारे में जानेंगे, उतना ही बेहतर हम पवित्र शास्त्र के मूल अर्थ को समझ पाएंगे।

हमारी जाँच में बाइबल के दस्तावेज पर जोर देने के लिए ईश्वरीय-विज्ञान का आधार मुख्य रूप से दो महत्वपूर्ण सिद्धांतों में पाया जा सकता है: मूल भूत प्रेरणा का सिद्धांत, और दिव्य समायोजन का सिद्धांत।

मूल भूत प्रेरणा के सिद्धांत के साथ शुरू करते हुए, आइए देखें कि इनमें से प्रत्येक सिद्धांत कैसे बाइबल के दस्तावेजों के महत्व को इंगित करते हैं।

मूलभूत प्रेरणा

मूलभूत प्रेरणा का सिद्धांत सिखाता है कि पवित्र आत्मा ने मानव लेखकों को पवित्र शास्त्र लिखने के लिए प्रेरित किया। लेकिन यह, ऐसा नहीं कहता कि उस दस्तावेज की बनी हर एक प्रति त्रुटि रहित होगी, या उस दस्तावेज से किया गया हर एक अनुवाद त्रुटि रहित होगा। वास्तव में, यिर्मयाह 8:8 जैसे स्थानों में, पवित्र शास्त्र स्वयं कहता है कि बाइबल के दस्तावेजों की प्रतिलिपि में त्रुटियां हो सकती हैं। और हम सभी ने देखा है कि बाइबल के दस्तावेजों के विभिन्न अनुवाद बहुत भिन्न हो सकते हैं।

क्योंकि मूलभूत प्रेरणा का सिद्धांत पवित्र शास्त्र के सिर्फ मूल ग्रंथों पर लागू होता है, इसलिए सिर्फ उन दस्तावेजों में ही परमेश्वर का पूर्ण अधिकार है। जब ये ग्रंथ शताब्दियों के दौरान नकल किए गए तो न तो इन ग्रंथों में जो बदलाव हुए, और न ही उन ग्रंथों के अनुवाद परमेश्वर द्वारा प्रेरित हैं। इसलिए, हमारे

आत्म-विश्वास को बढ़ाने के लिए कि हमने पवित्र शास्त्र के मूल अर्थ को सही रीति से समझा है, हमें उन ग्रंथों को खोजने और अध्ययन करने के लिए जिन्हें परमेश्वर ने वास्तव में प्रेरित किया, वह सब कुछ करना होगा जो हम कर सकते हैं।

बेशक, हमारे समय में हम पवित्र शास्त्र के मूल दस्तावेज़ों से कुछ हद तक दूर हो गए हैं क्योंकि वे अब उपलब्ध नहीं हैं। वे किसी पवित्र मंदिर या संग्रहालय में मौजूद नहीं हैं। हमारे पास सिर्फ नकल किए गए ग्रंथ और अनुवाद हैं। और इन प्रतियों और अनुवादों का अधिकार हमेशा इस बात पर निर्भर करता है कि वे उन वास्तविक दस्तावेजों का कितनी अच्छी तरह से प्रतिनिधित्व करते हैं जिन्हें बाइबल के लेखकों ने आत्मा की प्रेरणा के तहत निर्मित किया।

पवित्र शास्त्र के अधिकार को पूरी तरह से अस्वीकार करने के कारण के रूप में इस तथ्य को मसीही विश्वास के विरोधियों द्वारा उठाया जाता है। धर्मनिरपेक्षवादियों का तर्क है कि हम यह नहीं जान सकते कि पवित्र शास्त्र के मूल ग्रंथों ने क्या कहा, उनका अनुसरण करना तो दूर की बात है। मुसलमान लोग अक्सर यह तर्क देते हैं कि कुरान को अल्लाह द्वारा पूरी तरह से संरक्षित किया गया है, और इसलिए वे बाइबल से अधिक कुरान पर भरोसा करते हैं। ये मुद्दे इतनी बार सामने आते हैं कि हमें कुछ स्पष्टीकरण देने में पीछे नहीं हटना चाहिए।

सबसे पहले, मसीह के अनुयायियों के लिए याद रखने हेतु सबसे महत्वपूर्ण बातों में से एक यह है कि पुराने नियम के मूल दस्तावेज़ यीशु के दिनों में भी मौजूद नहीं थे। पुराने नियम की पुस्तकों का थोड़ा अलग इब्रानी संस्करण उस समय मौजूद था। और अरामी संस्करण भी थे, साथ ही सेप्टुआजेंट के कई संस्करण, जो कि पुराने नियम का यूनानी अनुवाद था। लेकिन यीशु और उसके प्रेरितों ने तब भी विश्वास किया कि जो पवित्र शास्त्र उनके पास थे, वे भरोसेमंद थे और परमेश्वर के लोगों की अगवाई करने के लिए पर्याप्त थे। इसी तरह, आरंभिक कलीसिया ने नए नियम के मूल दस्तावेजों की कई प्रतियों का उपयोग किया क्योंकि उन्होंने भी परमेश्वर के लोगों को निर्देशित करने के लिए विश्वसनीय प्रतियों के पूरी रीति से पर्याप्त होने पर विश्वास किया।

दूसरा, आधुनिक मसीही लोगों के पास पवित्र शास्त्र की प्राचीन प्रतियों का अध्ययन और तुलना करने में समर्पित कई दशकों की विद्वत्तापूर्ण शोध का लाभ है। इन खोजों ने बार-बार पुष्टि की है कि बाइबल के इब्रानी और यूनानी ग्रंथ उन ग्रंथों की तुलना में अधिक भरोसेमंद हैं जो कि हमारे पास अन्य प्राचीन ग्रंथों के हैं। अपने दिव्य विधान में, परमेश्वर ने पवित्र शास्त्रों को उल्लेखनीय तरीकों से संरक्षित किया है। इस कारण से, जो बाइबल आज हमारे है, यदि हम सावधानीपूर्वक उनकी व्याख्या करते हैं तो वे मसीह की कलीसिया की अगुवाई करने लिए आज भी पर्याप्त हैं।

> यदि आप प्राचीन इतिहास की पुस्तकों को हस्तांतरित करने जा रहे हैं, तो उसे किसी लिपिक द्वारा हाथ से नकल और अक्षर दर अक्षर और शब्द दर शब्द नकल किया जाना है। जब ऐसा होता है, तो स्वभाविक लिपिक वाली भिन्नताएं उसमें आ जाती हैं: गलत वर्तनी, शब्दों का छुट जाना, शब्द क्रम का बदलना, और इसी तरह के अन्य। यदि बाइबल पूरे इतिहास में सामान्य समय और स्थान में हस्तांतरित होने जा रही है तो ये अपरिहार्य हैं। लेकिन प्रश्न यह है कि क्या ये परिवर्तन इतने महत्वपूर्ण हैं, और इतने सार्थक हैं, और इतने गंभीर हैं कि यह प्रश्न किया जाए कि क्या हमारे पास पवित्र शास्त्र के मूल वचन हैं। अच्छा तो, यह निर्धारित करने के लिए कि क्या हमारे पास पवित्र शास्त्र के मूल वचन हैं, हम सामूहिक बचे हुए पांडुलिपियों को जो हमारे पास हैं देख सकते हैं और उनकी एक दूसरे के साथ तुलना कर सकते हैं, और हम देख सकते हैं कि समय के साथ कितना परिवर्तन हुआ है। और जब बाइबल की बात आती है तो अच्छी खबर यह है कि हमारे पास बाइबल की इतना सारी पांडुलिपियाँ हैं कि हम उनकी तुलना

> कर सकते हैं, हम देख सकते हैं कि समय के साथ वे कैसे विकसित हुए हैं, और हम देख एवं जान सकते हैं कि वास्तव में मूल ग्रंथ क्या था। और यह हमें बहुत आत्म-विश्वास देता है कि वे वचन जो आज हमारे पास हैं, वे वही वचन हैं जो मूल रूप से उस समय लिख गए थे। तो, हाँ, लिपिकों ने समय-समय पर पाठ्यांश को जरूर बदला लेकिन उस तरीके से नहीं कि हम विश्वासयोग्य तरीके से पाठ्यांश को पुनःप्राप्त न कर सकें।
>
> — डॉ. माइकल जे. क्रूगर

> बाइबल को सदी दर सदी दर सदी हाथ से नकल किया गया है। वास्तव में, वर्ष 1454 तक बाइबल की सभी प्रतियों को हाथ से लिखा गया था ... इसलिए क्या बाइबल समय के दौरान बाइबल भ्रष्ट हो गई है इसका संक्षिप्त उत्तर है: बेशक यह हुई है। लेकिन बड़ा उत्तर कहता है, लेकिन यह कैसे भ्रष्ट हो गई है और यह कितनी भ्रष्ट हो गई है? जब इन प्रकारों के मुद्दों की बात आती है, तो यह लगभग पुस्तक दर पुस्तक पर निर्भर करता है, लेकिन पवित्र शास्त्र की नकल करने के बारे में सबसे आश्चर्यजनक बातों में से एक यह है कि एक भी आवश्यक सिद्धांत ऐसा नहीं है जो कभी भी इन ग्रंथों के अंतर द्वारा खतरे में पड़ गया हो। यह एक आश्चर्यजनक तथ्य है ... हम शायद कह सकते हैं कि, वाह, कोई व्यक्ति पर्दे के पीछे हमारे लिए लेख को संरक्षित कर रहा है ... लेकिन एक बार फिर, कोई ऐसा आवश्यक सिद्धांत नहीं है जिसे मसीही विश्वास का मौलिक सिद्धांत माना गया है जो किसी भी तरह इन अंतरों से प्रभावित हुआ है।
>
> — डॉ. डैनियल बी. वॉलेस

फिर भी, चुंकि आधुनिक अनुवाद अपूर्ण हैं, इसलिए जैसा अनुसंधान माँग करता उन्हें सुधारने के लिए हमें तैयार रहना चाहिए। इसके अलावा, पवित्र शास्त्र की हमारी व्याख्याओं को कभी भी किसी वाक्यांश के बदलाव, किसी विशेष शब्द के चुनाव, या किसी अन्य छोटी वस्तु के ऊपर, जो सिर्फ कुछ ही प्राचीन पांडुलिपियों में या पवित्र शास्त्र के विशेष अनुवादों में दिखाई देते हैं, बहुत अधिक निर्भर रहने की हमें अनुमति नहीं देनी चाहिए। पवित्र शास्त्र के कई अन्य भागों के साथ पाठ्यांशों के विशेष भागों की हमारी व्याख्या की पुष्टि करने के लिए हमें कड़ी मेहनत करने की आवश्यकता है।

जैविक प्रेरणा की इस समझ को ध्यान में रख कर, आइए पवित्र शास्त्र की हमारी जाँच में बाइबल के दस्तावेजों पर जोर देने के लिए ईश्वरीय-ज्ञान वाले दूसरे आधार पर ध्यान देते हैं, अर्थात, दिव्य समायोजन का सिद्धांत।

दिव्य समायोजन

समायोजन के सिद्धांत का तात्पर्य है कि पवित्र शास्त्र में सब कुछ — उसके शब्दों, व्याकरण और साहित्यिक शैली जैसी चीज़ों सहित — जो अपने दिनों के सांस्कृतिक और भाषाई प्रथाओं से निकले हैं। इसलिए, यदि हम उन तरीकों पर सावधानीपूर्वक ध्यान देते हैं जिनमें पवित्र शास्त्र इन प्रथाओं को दर्शाता है, तो हम इसकी सही रीति से व्याख्या कर पाएंगे।

सिर्फ एक उदाहरण के रूप में, यूहन्ना 20:16 से इस विवरण को सुनिए:

> यीशु ने उससे कहा, "मरियम!" उसने पीछे मुड़कर उससे इब्रानी में कहा, "रब्बूनी!" (अर्थात् 'हे गुरु') (यूहन्ना 20:16)।

कोष्ठक में शब्दों पर विशेष ध्यान दीजिए। यह लेख यूनानी में लिखा गया था, लेकिन जब यूहन्ना ने मरियम को उद्धृत किया, तो उसने "गुरु" के लिए यूनानी शब्द का उपयोग नहीं किया; उसने अरामी शब्द का उपयोग किया, और फिर अनुवाद को पेश किया।

यूहन्ना ने पहले मरियम के शब्दों को अरामी शब्द *रब्बूनी* के साथ संदर्भित किया, जो मूल शब्द था जिसे मरियम ने यीशु के लिए बोला था। लेकिन यूहन्ना ने स्पष्ट रूप से माना कि उसके पहले पाठकों की बड़ी संख्या अरामी भाषा को नहीं जानते थे। इसलिए, उसने ऐसे अनुवाद को पेश करके पाठ्यांश को समायोजित किया जिसे वे समझ सकेंगे: यूनानी शब्द *डिडास्कालोस* । *रब्बूनी* का पहले उपयोग करके, यूहन्ना ने झिझक का एक क्षण पैदा किया जिसने मरियम की प्रतिक्रिया के नाटक को बढ़ा दिया। यूहन्ना के लेख ने उसके पाठकों को मरियम की खुशी की चिल्लाहट की वास्तविक आवाज़ की कल्पना करने के लिए, यानी जीवित हुए उद्धारकर्ता में उसकी खुशी की सराहना करने के लिए प्रेरित किया।

इस तरह के साहित्यिक उपकरण और प्रथाएं पवित्र शास्त्र के मूल दस्तावेज़ों में समायोजन के महत्व को दर्शाते हैं, और मूल अर्थ की हमारी जाँच में इसी तरह के मुद्दों पर ध्यान केंद्रित करने के लिए हमें प्रोत्साहित करते हैं।

> जब आप बाइबल को पढ़ते हैं, तो यह स्पष्ट हो जाता है कि जो पाठ्यांश में कहा जा रहा है, उसे अपने मूल पाठकों को समझने में मदद करने के लिए लेखक जो कर सकते थे उन्होंने वह किया। इसलिए, उदाहरण के लिए, सुसमाचार लेखक अपने पहले पाठकों के लाभ के लिए अरामी या इब्रानी शब्दों का अनुवाद कर सकते हैं। या कभी-कभी स्थानों को अन्य स्थानों के संबंध में दर्शाया जाएगा ताकि वे स्वयं को उस भूगोल के भीतर अनुकूल बना सकें जिसमें वह लिखा गया था। और ऐसे कई सारे तरीके हैं जिनमें यह एकदम स्पष्ट है कि लेखकों ने सोचा था कि पाठ्यांश को समझने में मूल श्रोताओं को मदद की आवश्यकता है ताकि वे उनके हाथों में, जैसा कि यह था, उन उपकरणों को रखेंगे जिनकी आवश्यकता उन्हें बाइबल को उचित रीति से समझने के लिए थी।
>
> — डॉ. सायमन वायबर्ट

> यदि यह मानवीय है तो यह भी सत्य है कि सभी चीज़ों का सांस्कृतिक संदर्भ होता है। कोई ऐसा तरीका नहीं जिससे आप मानव भाषा और मानव संस्कृति के बिना मनुष्यों को संबोधित कर सकते हैं। और इसलिए, जब परमेश्वर हमें अपना संदेश देता है, तो वह हमें अपना संदेश उन तरीकों से देता है जिसे हम समझ सकें। जब यह शब्दों में है, जैसा कि पवित्र शास्त्र है, तो यह एक विशिष्ट भाषा में होगा। और साथ में, यह संस्कृतियों के उन साकार रूपों में हमारे पास आता है जिनमें यह दिया गया था। अब, कुछ चीज़ें बहुत स्पष्ट रीति से अंतर-सांस्कृतिक हैं। मेरा अर्थ है, "तू व्यभिचार न करना" सभी संस्कृतियों में एक जैसा है ... लेकिन फिर, पवित्र शास्त्र में ऐसी भी बातें हैं जैसे कि छत के चारों ओर एक पैरापेट, या छत के चारो ओर एक बाड़ का निर्माण करना, ताकि आपका पड़ोसी छत से न गिरे और आप पर खून का अपराध लग जाए। खैर, मेरे पड़ोस में, हमारे पास सपाट छतें नहीं है। आमतौर पर हमारे पड़ोसी छत पर नहीं जाते हैं, इसलिए छत के चारों ओर बाड़ होना मुद्दा नहीं है। लेकिन यहाँ जो सिद्धांत है उसे सभी संस्कृतियों में लागू किया

> जा सकता है, और जो सिद्धांत यहाँ है कि आपको अपने पड़ोसी की सुरक्षा के बारे में ध्यान रखना चाहिए। आप अपने भाई या बहन के रखवाले हैं। सभी पवित्र शास्त्र सभी परिस्थितियों के लिए नहीं हैं। यह सभी समय के लिए है, लेकिन यह सभी परिस्थितियों के लिए नहीं हैं। हमें यह पता लगाने की जरूरत है कि परिस्थितियां क्या हैं, और हमें पता लगाने की जरूरत है कि उन विभिन्न परिस्थितियों में इसे कैसे ठोस रीति से लागू किया जाए, क्योंकि यह वह तरीका है जिसमें परमेश्वर ने हमें इसे दिया है।
>
> — डॉ. क्रेग एस. कीनर

जैसा कि हमने देखा है, लेखक, दस्तावेज़ और बाइबल के प्रत्येक अनुच्छेद के श्रोताओं पर ध्यान देने के लिए स्वयं पवित्र शास्त्र एक मजबूत ईश्वरीय-ज्ञान वाला आधार प्रदान करता है। अब बेशक, मूल अर्थ के लिए इन तीनों मार्गदर्शकों पर ध्यान देने के लिए बहुत अधिक मेहनत की आवश्यकता है। लेकिन बाइबल के किसी अनुच्छेद के लेखक, दस्तावेज़ और मूल श्रोताओं के बारे में हम जितना अधिक जानते हैं, इसका मूल अर्थ पता लगाने में हम उतना ही बेहतर रीति से सक्षम बनेंगे। और जितना अधिक हम मूल अर्थ को समझते हैं, पवित्र शास्त्र को अपने जीवनों में लागू करने में हम उतना ही बेहतर रीति से सक्षम बनेंगे।

अब जबकि हमने देख लिया है कि मूल अर्थ क्या है और इसके ईश्वरीय-विज्ञान के आधार का पता लगा लिया है, तो आइए पवित्र शास्त्र की हमारी जाँच में मूल अर्थ पर ध्यान देने के महत्व को देखें।

महत्व

हम दो तरीकों से उचित जाँच के महत्व पर विचार करेंगे। सबसे पहले, हम पूरे कलीसियाई इतिहास में, विशेष रूप से प्रोटेस्टेंट रिफॉर्मेशन के दौरान इस प्रक्रिया के महत्व को देखेंगे। और दूसरा, हम आधुनिक कलीसिया में कुछ चुनौतियों को संबोधित करेंगे जिन्होंने मूल अर्थ की जाँच के महत्व को घटाया है। आइए कलीसियाई इतिहास के साथ शुरू करें।

कलीसियाई इतिहास

मूल अर्थ को खोजना बाइबल की व्याख्या की एक नयी, आधुनिक अवधारण नहीं है। यह सत्य है कि निश्चित समयों पर मसीही कलीसिया ने अपेक्षाकृत विस्तृत व्याख्या-शास्त्र की प्रणालियों की वकालत की जो कि आज की तुलना में मूल अर्थ से बहुत कम दिलचस्पी रखते थे। फिर भी, मसीही धर्म के पूरे इतिहास में, अग्रणी धर्मविज्ञानियों ने आग्रह किया है कि पवित्र शास्त्र के मूल अर्थ की खोज करना बाइबल की व्याख्या का एक अनिवार्य हिस्सा है।

शुरूआती कलीसिया की चिंताओं में से एक था कि ऐसे गलत शिक्षा वाले समूहों से उठने वाली चुनौतियों के खिलाफ पवित्र शास्त्र के मूल अर्थ को संरक्षित रखना जिन्होंने अपने उद्देश्यों के अनुरूप इसके अर्थ को मरोड़ा था। कलीसियाई इतिहास में कई शुरूआती लेखकों ने बाइबल की पुस्तकों के मूल संदेश को संरक्षित करने के लिए कड़ी मेहनत की क्योंकि सिर्फ मूल संदेश ही आधिकारिक था।

उदाहरण के लिए, प्रारंभिक कलीसिया पिता (चर्च फादर) इरेनेयुस, जो सन् 130 से 202 के आसपास रहे थे, उन्होंने अपने लेख *अगेंस्ट हेरेसीज़,* पुस्तक 3, अध्याय 7, भाग 1 में पौलुस के लेखों की झूठी व्याख्याओं की निंदा की। इरेनेयुस ने वहाँ क्या कहा उसे सुनिए:

> जैसा कि उनके इस पुष्टि के लिए जो पौलुस ने कुरिन्थियों की दूसरी पत्र में स्पष्ट रूप से कहा, "और उन अविश्वासियों के लिये, जिन की बुद्धि इस संसार के ईश्वर ने अंधी कर दी है," और यह सुनिश्चित करते हुए कि वास्तव में इस संसार का एक ईश्वर है, लेकिन एक और है जो सभी प्रधानताओं, और शुरूआत, और शक्ति से ऊपर है, ... वे ... नहीं जानते कि पौलुस को कैसे समझा जाए।

इरेनेयुस नॉस्टिक शिक्षकों का खंडन कर रहा था जो मानते थे कि यीशु पुराने नियम के सृष्टिकर्ता परमेश्वर से भी महान ईश्वर से आया है। ये झूठे शिक्षक मानते थे कि 2 कुरिन्थियों 4:4 ने सिखाया कि पुराने नियम के "इस संसार के ईश्वर" ने नए नियम के इस उच्च ईश्वर के अस्तित्व के लिए लोगों को अंधा किया है, जो "सभी प्रधानताओं, शुरूआत और शक्ति से ऊपर है।" इरेनेयुस ने अपनी पुस्तक के इस अध्याय को यह दिखाने के लिए समर्पित किया कि ये नॉस्टिक व्याख्याकार नहीं जानते हैं कि पौलुस को कैसे समझना है क्योंकि वे पौलुस के मूल अर्थ को नहीं समझ पा रहे थे।

यूरोप में मध्य युगों के दौरान, कुछ चरम मामले थे जिनमें पवित्र शास्त्र को मुख्य रूप से चर्च परंपरा के संदर्भ में देखा गया था। लेकिन मूल अर्थ या जैसा कि अक्सर इसे कहा जाता है *सेसंस लिटरलिस* पर भी मजबूत विश्वास था।

उदाहरण के लिए, प्रसिद्ध धर्मविज्ञानी थॉमस ऐक्विनास ने अपनी रचना *सुम्मा थियोलॉजिका,* भाग 1, प्रश्न 1, अनुच्छेद 10 में तर्क दिया कि *सेसंस लिटरलिस* उन सभी अन्य अर्थों के लिए आधार था जो किसी पाठ्यांश के हो सकते हैं।

> इसलिए पवित्र लेखन में कोई भ्रम पैदा नहीं होता है, क्योंकि सभी अर्थ एक पर आधारित हैं — शाब्दिक — सिर्फ जिससे कोई भी तर्क निकाला जा सकता है, और न कि उनसे जो रूपक में अभिप्रेत हैं।

जैसा कि यह अनुच्छेद स्पष्ट रूप से इंगित करता है, ऐक्विनास ने माना कि पवित्र शास्त्र के लिए कई अर्थ हैं, लेकिन उन्होंने जोर देकर कहा कि "सभी अर्थ ... शाब्दिक पर आधारित हैं।" और कि यह शाब्दिक अर्थ वह है "जिसमें से कोई भी तर्क" — या कलीसिया में व्याख्या — "निकाली जा सकती है।"

बाद में, चौदहवीं से लेकर सत्रहवी शताब्दियों के यूरोपीय पुनर्जागरण काल के दौरान, साहित्य की व्याख्या के ऊपर चर्च का नियंत्रण समाप्त होना शुरू हो गया। जिसके परिणामस्वरूप, मौजूदा चर्च परंपरा के लिए व्याख्या को अनुरूप बनाने पर जोर कमजोर पड़ने लगा, और पवित्र शास्त्र के मूल अर्थ पर जोर देना बढ़ने लगा। इस अवधि के दौरान, कई महत्वपूर्ण यूनानी और लातीनी शास्त्रीय ग्रंथ अपनी मूल भाषाओं में यूरोप में परिसंचारित होने लगे। और इन ग्रंथों का अध्ययन करने वाले विद्वानों ने इनकी मूल भाषाओं और ऐतिहासिक परिवेशों पर ध्यान केंद्रित किया। इसके अलावा, उन्होंने इन ग्रंथों की अपनी व्याख्या को चर्च के अधिकार और परंपरा के बजाय मूल अर्थ पर आधारित किया।

पंद्रहवीं और सोलहवीं शताब्दियों में प्रोटेस्टेंट रिफॉर्मेशन के दौरान व्याख्या-शास्त्र में जो कुछ भी हुआ, इस बदलाव ने उसके लिए आधारशिला रखी। मार्टिन लूथर और जॉन कैल्विन जैसे विद्वानों ने इनकी मूल भाषाओं और ऐतिहासिक संदर्भों में पवित्र शास्त्र की जाँच करने के लिए स्वयं को समर्पित किया। उन्होंने माना कि पवित्र शास्त्र के मूल अर्थ को जानना उन्हें बाइबल को अपने एकमात्र पूर्ण अधिकार के रूप में बनाए रखने में सक्षम बनाता है, यहाँ तक कि रोम के धर्म-विज्ञान पर भी।

सुसमाचारीक विद्वानों के बीच, पवित्र शास्त्र की व्याख्या के इस दृष्टिकोण को "व्याकरण-ऐतिहासिक पद्धति" कहा जाने लगा। इस पद्धति को पवित्र शास्त्र में देखा जाता है, पूरे कलीसियाई इतिहास में यह महत्वपूर्ण था, और रिफॉर्मेशन के समय से पवित्र शास्त्र के अध्ययन के लिए यह प्रमुख दृष्टिकोण रहा है।

> मध्य युगीन कालों में, पवित्र शास्त्र पूरे समाज की पुस्तक थी। सभी विद्वान लोग अपना अधिकांश समय पवित्र शास्त्रों का अध्ययन करने में बिताते थे, और बेशक, इसने समाज के साथ-साथ कलीसिया में भी प्रमुख भूमिका निभाई। और पवित्र शास्त्र के उस अध्ययन में, पवित्र शास्त्र को समझने का एक बहुत ही विस्तृत तरीका जो पाठ्यांश की कई अलग-अलग परतों पर ध्यान केंद्रित करता था, उन्होंने उसे मध्य युगीन कालों में विकसित किया। पवित्र शास्त्र का मूल अर्थ, यदि उससे हमारा तात्पर्य है ऐतिहासिक लेखकीय अभिप्राय, तो यह निश्चित रूप से मध्य युग की व्याख्यात्मक पद्धति का एक बहुत महत्वपूर्ण हिस्सा था। हालांकि, यह एक अधिक बड़े लक्ष्य के साधन के रूप में देखा गया था। बाद की अधिकतर व्याख्या की विपरीत, लेखकीय अभिप्राय या मूल अर्थ को अच्छी समझ के लिए आधार के रूप में देखा गया था, लेकिन कुछ ऐसा था जिसे मूल अर्थ से अधिक महत्वपूर्ण माना गया था। यह ख्रीष्ट-विद्या संबंधी था, मसीह पर ध्यान केंद्रण, और अक्सर युगांत-विद्या संबंधी या अंतिम अंत समयों पर ध्यान केंद्रण या अंतिम ख्रीष्ट-विद्या संबंधी बाइबल का अध्ययन। और इसलिए लेखकीय अभिप्राय अहमियत रखता था, लेकिन इसे अंतिम लक्ष्य के रूप में नहीं देखा गया। इसे लक्ष्य के लिए साधन के रूप में देखा गया।
>
> — डॉ. जॉनथन टी. पेनिंगटन

> मूल अर्थ और मध्य युगों में चर्च परंपरा के बीच संबंध के बारे में प्रश्न पूछना कुछ ऐसा है जो शायद मध्ययुगीन व्याख्याकार को आपकी ओर अजीब तरह से देखने का कारण बनता, क्योंकि मध्ययुगीन समयों में वे पवित्र शास्त्र के अर्थ के बारे में गंभीरता से चिंतित थे ... वे बाइबल को इस आधारभूत विश्वास के साथ पढ़ रहे थे कि चर्च की परंपरा बाइबल की शिक्षा थी। अब इक्कीसवीं सदी के प्रोटेस्टेंट के रूप में हमारे लिए उस पर उपेक्षापूर्ण हंसना आसान है, लेकिन हम इसके प्रति प्रतिरक्षित नहीं हैं। हमारे बहुत सारे लोग हैं जो चारों ओर भाग रहे हैं जो कहेंगे, कि क्या जानते हैं कि जॉन कैल्विन की शिक्षा पवित्र शास्त्र की शिक्षा है, या जॉन वेस्ले की, या मार्टिन लूथर की, या और कोई भी। इसलिए, मध्य युगों में जो हो रहा है वह यह है कि वे पवित्र शास्त्र की व्याख्या करने के ऐसे तरीके को विकसित कर रहे हैं जो विश्वास के अधिकार की गतिशीलता पर आधारित है। वह प्रश्न जो मध्ययुगीन व्याख्याकार पूछ रहे हैं, वह है कि, "इस अनुच्छेद के विवरणों के माध्यम से हमारे लिए उभर रहे उस विश्वास को कैसे प्रेरितों द्वारा आगे संचारित किया गया?"
>
> — डॉ. कैरी विन्ज़ैन्ट

अब जबकि हमने देख लिया है कि बाइबल के पाठ्यांशों के मूल अर्थ की जाँच करना पूरे कलीसियाई इतिहास में महत्वपूर्ण था, तो आइए इस विचार के लिए कुछ चुनौतियों पर विचार करें जो आधुनिक कलीसिया में पैदा हुई हैं।

आधुनिक कलीसिया

हम ऐसे समय में रहते हैं जब, न सिर्फ बाइबल के, बल्कि किसी भी ग्रंथ के मूल अर्थ के महत्व पर विभिन्न तरीकों से प्रश्न पूछा गया है। जैसा कि हमने पहले ही देखा है, अतीत में, कई व्याख्याकारों ने बाइबल के प्रत्येक अनुच्छेद के लिए कई अर्थों की बात की है क्योंकि वे मानते थे कि बाइबल उस परमेश्वर की ओर से आई है जिसकी बुद्धि हमारी समझ से बहुत परे है। लेकिन आधुनिक संसार में, बाइबल के मूल अर्थ या किसी भी साहित्य के मूल अर्थ के महत्व पर परमेश्वर के कारण नहीं, बल्कि मानव संचार की प्रकृति के कारण सवाल उठाए गए हैं।

बीसवीं शताब्दी की शुरूआत में, साहित्यिक आलोचना के आधुनिक स्कूलों ने मूल अर्थ की अवहेलना शुरू कर दी। इन स्कूलों के सबसे शुरूआती लोगों ने आमतौर पर यह तर्क दिया कि पवित्र शास्त्र के लेखक और मूल श्रोतागण बहुत हद तक समझने में अयोग्य थे। इतिहासकारों ने कहा कि लेखकों और श्रोताओं की निश्चितता के साथ पहचान नहीं की जा सकती है। मानव-विज्ञानियों ने जोर दिया कि हम आधुनिक संस्कृतियों के निष्कर्षों को प्राचीन संस्कृतियों के लिए लागू नहीं कर सकते। मनोवैज्ञानियों ने सुझाव दिया कि आधुनिक पाठक प्राचीन लेखकों के इरादों को विश्वसनीय रीति से समझ नहीं सकते। और दार्शनिकों ने तर्क दिया कि सभी मानवीय ज्ञान इतने व्यक्तिपरक हैं कि हम वास्तव में कभी नहीं जान सकते हैं कि लेखक क्या सोच रहे थे।

बीसवीं शताब्दी के मध्य तक, प्राचीन लेखकों और श्रोताओँ की पहचान करने में निराशा ने कई व्याख्याकारों को उन्हें पूरी तरह से अनदेखा करने और पूरी तरह से पाठ्यांश पर ध्यान केंद्रित करने की अगुवाई की। नए आलोचकों ने बिना किसी ऐतिहासिक संदर्भ के ग्रंथों को समझने की कोशिश की। संरचनावादियों ने भाषाई प्रणाली में अन्य सभी संभावित विकल्पों के संबंध में किसी दस्तावेज़ में शब्दों के चुनावों में अर्थ को पाया। और पाठक-प्रतिक्रिया के आलोचकों ने उन प्रतिक्रियाओं में अर्थ की तलाश की जो समकालीन पाठकों के पास पाठ्यांश के लिए थीं।

बीसवीं शताब्दी के अंतिम दशकों में, साहित्यिक आलोचकों ने यहाँ तक कहा कि स्वयं पाठ्यांश का अर्थ अज्ञात या अज्ञेय था — या इससे भी बदतर, बुरा था । कुछ उत्तर-संरचनावादियों ने प्राचीन लेखकों को अपने विचारों को आधुनिक पाठकों पर लागू करने की अनुमति देने से इनकार कर दिया। पाठ्यांशों को अबोध्य दिखाने के लिए, उन्होंने पाठकों को स्पष्ट रूप से विरोधाभासी और अस्पष्टताओं पर ध्यान केंद्रित करने के द्वारा प्राचीन ग्रंथों का विश्लेषण करने को प्रोत्साहित किया। और कई आलोचानात्मक विद्वानों ने प्राचीन लेखकों को खारिज कर दिया, और आधुनिक पाठकों को उनके स्वयं के उद्देश्यों के लिए फिट बैठाने हेतु पवित्र शास्त्र के वचनों को मरोड़ने के लिए प्रोत्साहित किया।

यह जितना भी अजीब लग सकता है, लेकिन इससे उन आलोचनात्मक विद्वानों से उपयोगी अंतर्दृष्टि प्राप्त करना वास्तव में संभव है, जो पवित्र शास्त्र के मूल अर्थ की खोज करने के महत्व को चुनौती देते हैं। लेकिन कुल मिलाकर, हम रिफॉर्मेशन की शिक्षाओं को याद रखने में बुद्धिमान हैं। मानव व्याख्याकारों के अत्याचार, व्याख्या-शास्त्र के अत्याचार से बचने का एकमात्र तरीका है, कि बाइबल के अनुच्छेदों को उस ऐतिहासिक संदर्भ में देखना जिसमें पवित्र आत्मा ने सबसे पहले उन्हें प्रेरित किया था। बाइबल के अधिकार को उन व्यक्तियों, सांस्कृतिक प्रथाओं, कलीसियाओं और अन्यों के खिलाफ सुरक्षित करने का यही एकमात्र तरीका है जो अक्सर अपने स्वयं के उद्देश्यों के लिए पवित्र शास्त्र का

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिए, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

उपयोग करते हैं और सिर्फ दूसरों के जीवनों के ऊपर स्वयं अपने अधिकार को लागू करने के लिए पवित्र शास्त्र का समर्थन होने का दावा करते हैं।

सुधारकों ने देखा कि चर्च आधिकारियों के व्याख्या-शास्त्र द्वारा किये जा रहे अन्याय से बचने का एकमात्र तरीका बाइबल को उस ऐतिहासिक संदर्भ में देखना था जिसमें पवित्र आत्मा ने इसे प्रेरित किया था। बहुत कुछ इसी तरह, समकालिन व्यक्तियों, राजनैतिक आंदोलनों, कलीसिया और अन्य शक्तियों के व्याख्या-शास्त्र द्वारा किये जा रहे अन्याय के खिलाफ बाइबल के अधिकार को सुरक्षित करने का एकमात्र तरीका बाइबल के मूल अर्थ को खोजना है।

उपसंहार

पवित्र शास्त्र की जाँच पर इस अध्याय में, हमने हमारी जाँच के उद्देश्य के रूप में पवित्र शास्त्र के मूल अर्थ को परिभाषित किया है। हमने मूल अर्थ पर ध्यान केंद्रित करने के लिए ईश्वरीय-ज्ञान वाले आधार को समझाया है। और हमने मूल अर्थ पर उचित ध्यान देने के महत्व को देखा है।

जैसा कि हमने इस पूरे अध्याय में देखा, बाइबल की व्याख्या के कई पहलू किसी पुरातत्व की खुदाई पर जाने जैसे हैं। हम उनके मूल अर्थों को समझने के लिए उनके प्राचीन ऐतिहासिक संदर्भों में पवित्र शास्त्र की जाँच करते हैं — ऐसे तरीके जिनमें पवित्र आत्मा और उसके द्वारा प्रेरित लेखकों ने अपने मूल श्रोताओं की अवधारणाओं, व्यवहारों और भावनाओं को प्रभावित करने के लिए अभिप्रेत किया। बाइबल के प्रत्येक पाठ्यांश के मूल अर्थ को समझने के लिए अपनी पूरी कोशिश करना व्याख्या के लिए महत्वपूर्ण है क्योंकि मूल अर्थ पूरे इतिहास में उसके लोगों के लिए स्वयं परमेश्वर के अधिकार को धारण करता है। और इसी कारण, हमें बाइबल के प्रत्येक अनुच्छेद के मूल अर्थ के बारे में अपनी समझ को सुधारने के लिए हमेशा तैयार रहना चाहिए, ताकि हम सुनिश्चित कर सकें कि प्रत्येक आधुनिक अनुप्रयोग जिसे हम बनाते हैं वह उसके आधिकारिक मूल अर्थ के अनुरूप हो।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिए, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।